

DPN 6746

श्री सूर्यादि गाथा सदाशिव भट्टारकस्य नित्य कर्म विधि

Title: ŚRĪ SURYĀDI NĀRĀYAṆA SADĀŚIVA BHATTĀRAKASYA NITYA KARMA VIDHI

Run. No. 7471

Cat. No. 31

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

आमथालम नेपाल भाषा निर्देश नभएको
Newa direction elsewhere.

Size in cms. 19.5 x 8.5

Folios 33

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

१. ॐ नमः शानिश्चालय ॥ ॥ नकसं पुनां, स्वां, नवकाय, ॥ ॥ नारवं वुय ॥

ॐ नमः श्री सूर्यादि गाथा सदाशिव भट्टारकस्य, नित्य कर्म विधि लिख्यते ॥ ॥
मूनं न्यास ॥ हां, इति ॥ देव स्नान याम ॥

समाप्ति वाक्य / Colophon

इति विष्णु कर्म समाप्त ॥ ॥ लाहुरिया, पद्धति, ख जुनो ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ यवि गुम्हा ॥ जल स्नान ॥ ॐ स्वस्ति न ॐ नमः ॥ वन्दन ॥
॥ ॐ यद द्यक ॥ अक्षर ॥ ॐ अवध गायस्वस्व विगमेन ॥
हि ० सीः ॥ पृष्ठादि ॥ या रु लनी ॥ यव गिल ॥ ॐ य वा सि ॥
॥ गिल ॥ ॥ आ वम नं ३ ॥ ॥ ॐ आत्मन लाय स्वाहा ॥ ॥
॥ ॐ विद्यान लाय स्वाहा ॥ ॐ जिवन लाय स्वाहा ॥ ॥
॥ सूर्य या न्यास ॥ ॐ त्रै अक्षर रु ४ ॥ कत्र सा धनं ॥

॥ त्रैक निष्ठ काय नमः ॥ अक्षर अनामिका लां नमः ॥ रु ३
वेस्वः ॥ काल नीम अमा लां नमः ॥ ॐ ग र्ज नि लां नमः ॥ ॥
॥ ॐ अं गु लां नमः ॥ त्रै कत्र नत्र प लां नमः ॥ ॐ वं
रुद यादि ॥ ॐ ३ गन अर्घ पात्र रु ३ ॥ आ वारु नस्त्राय
नच न्द ना रु प्यं नमः ॥ पद्म म् ३ द ३ यग ॥ आत्म
नं सिंच यग ॥ आत्मन च न्द नं नमः ॥ आत्मसि लजि

॥ अं नमः ॥ आ सा स्याये नमः ॥ आ समरुथ नमः ॥ ॥
॥ अः ५ न्नि न नमः ॥ अः पिं ग लाय नमः ॥ ॐ कौं क्रीसः
शासु र्याथ नमः ॥ ३ ॥ ॐ हं रवं था द काय सूर्य मरुथ न
मः ॥ गमय गी ॥ ॐ उ ग न गाय विप्र रु म हा रा स्र नाय धी
महि न न्ना ए नू प्र चा द या न् ॥ आ दि ला दि ॥ आ सा अं वू
व ॥ ३ ॥ न व ग रू था ॥ ॐ मां पू र्णं व लिं रं द्र र सा हा ॥

॥ आ वारु न स्र य न र न्द न् अ क्त पृ र्थ न मः ॥ ॥ ५ प दी
प न्ने व र्थ न म् द र्थ नं न मः ॥ प द्म म् डां द र्ज य न् ॥ आ
प ॥ रु नौ सा हा ॥ म लु ल द य के सां ग ये ॥ शा सूर्यो य द
वाय ॥ अ म्हा ना गी र क्क र व मि व द ध न सा न्द्र सि न्द्र न
र्त्त न का स के ॐ वा धे रु द य मि त्रि ग ति धा तु धा ना उ
व स्र आ यां सा तु ल्म का लं क म ल व न रु र्वा रु ना हा वि

धं
धं सनाय, कनिष्ठिकायां नमः॥ ॐ श्री हनदी फायरु
दुरुद रुद्राय रुद्र॥ ॐ गं न्यास॥ ॐ श्री हदयाः
यपत्रापत्रसूत्रपायनमः॥ ॐ श्री समरुवलपत्राः
कुमायजितसुखराः॥ ॐ श्री नमानात्रायनायसिद्धिः
अधिप्रदायिन, जिह्वाय वीषट्॥ ॐ श्री विद्वन्ननु
लनिर्जितसमयाय विषनाशनकवचाय ह्रीः॥ ॐ

श्री हारुद्रकीयमस्तु न च कान धं सनाय, न गृह्याय व
षट्॥ ॐ श्री हनदी फायरुदुरुद रुद्राय रुद्र॥ ॐ
तिर्गं न्यास॥ गन, षट् (गन, अर्घ्यपात्रयद्रा, अस्म
यद्रा॥ ॥ ॐ श्री पद्मास्त्राय नमः॥ ॐ श्री गत्रास्त्राय
नमः॥ ॐ श्री स४ नमानात्रायनायविष्मत्स न श्री
हारुद्र॥ ॐ श्री लक्ष्मी वासुदेवानमः॥ अथ गी॥ ॐ

॥१॥ कंठ वादि ॥

जीविषु रूपाय विद्मह नानाया नाय धीमहि नाना
वैराय वादयागाँ वलि विख क स न क गु पा ला यं
मां य जां व लिं ग द्र र स्वा रु ॥ अ षा विं स ति म नु नं व
लि ॥ कं षा वा दि ॥ अ वा रु न स्का य न र न्द ना का
य षं न मा ॥ ध य दी य न म द य नं न मः ॥ ॐ दं ने व द्यं
न मः ॥ ~~ॐ नमः~~ ॐ दं न य ग ॥ जा य ॥ ॐ दं न स्का रु ॥ ॐ
॥ ॐ र व ॥

ॐ नमस्तु न नाय स रु स म ॐ स रु स पा दा क सि
ना न वा रु वे स रु स ना म्म यु क पा य ष म्म न स रु स का
गि य ग धा त्रि ले न मः ॥ व द ॥ ॐ वि श्वा न ना ट म सि ॥ ॐ
पा व का नः ॥ व दार् व न वि ध ग स र्व य त्रि यू न्मा म् ॥
॥ न ग क र्म वे पू वा र्व न ॥ ॥ अ र म न रा स दा णि
व या न्या स ॥ ॐ नः अ का य रु ढ ॥ के त ष म ध नं ॥ ॐ अं ग

ॐ नमः ॥ ॐ श्री लक्ष्मी ॥ ॐ श्री गङ्गा निवासी नमः ॥ ॐ
ॐ मधुमाता नमः ॥ ॐ देवी नामिका नमः ॥ ॐ श्रीः
कनिष्ठिका नमः ॥ ॐ श्रीः कनक लया नमः ॥
॥ श्री रुद्राय नमः ॥ श्री लक्ष्मी ललाटे ॥ श्री शायवोष
द ॥ ॐ कवचाय ॐ ॥ श्री भगवताय वषट् ॥ ह्रीः श्रुताय रु
द्र ॥ ॐ त्रिक नमः ॥ ग नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

॥ शम्भु ॥ ॥ ॐ ह्रीं यद्वासाय नमः ॥ ॐ ह्रीं सिंहाय
नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सः सदासिवाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं विद्या
देवाय नमः ॥ गायत्री ॥ ॐ नमः श्रुताय विष्णवे वासिष्ठा
द्याय विमलेश्वरी ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ सर्वोक्तिमि नमः
ह्रीं ॥ ॐ नमः ॥ वलि ॥ श्रुताय विष्णवे वासिष्ठा
वलि ॥ ॐ नमः ॥ श्रुताय विष्णवे वासिष्ठा

१५
१०
५
यं नमः॥ धृप, दीप, नेव द्यं नमः॥ दयं नं नमः॥ गिष्म
मूडां द धयं॥ अय॥ हाँ हा हा॥ ॐ दं द्यं नमः॥ ॥
॥ अ व म नं ३॥ ॥ अ एं अ य या न्यास॥ ॐ शं रु द् अ न के
अ का य अ स्त्राय रु द्॥ क न ल म ध नं॥ ॐ शं सः सर्वः
गाय, अं अ का र्णं नमः॥ ॐ शं शा म नि य, ग र्ज नि र्ण नः
मः॥ ॐ शं ॐ अ ना दि की र्णं नमः॥ ॐ शं श्व ग नु अ नाः
१ वा अ य म मा र्ण नमः

मिका र्णं नमः॥ ॐ शं अ ल फ अ का य, क नि षि का र्णं नमः॥
॥ ॐ शं रु द् अ न के अ का य, क न न य द्या र्णं नमः॥ ॐ शं
सः सर्वः गाय, द या य नमः॥ ॐ शं शा म नि य, सि त स स्वा
रा॥ ॐ शं ॐ अ ना दि वा धा ये, नि षा य वी ष द्॥ ॐ शं श्व ग
नु क व वा य द्॥ ॐ शं अ ल फ अ का य, न य त्र या य व ष द्॥
॥ ॐ शं रु द् अ न के अ का य, अ स्त्राय रु द्॥ ॐ गि क न, अं ग

३ नोत्तमपुत्रः॥

न्यासः॥ ॥ नमस्तु न. त्रयो यः ॥ ॐ ईश पद्मास्त्राय नमः
॥ ॐ ईश व. षास्त्राय नमः॥ ॐ ईशः ॥ ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
य. सदा निवायनः॥ ॐ ईश ॥ ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
सिगायनमः॥ ॥ गायत्री॥ ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
म. ह. त्रयो वाय धामसिगायनाम. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
॥ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वाय धामसिगायनाम. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा

ह. त्रयो वाय धामसिगायनाम. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
ह. त्रयो वाय धामसिगायनाम. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
मः॥ ॐ कपालि स. त्रयो वाय. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
ह. त्रयो वाय. वाम. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
नमः॥ ॥ ३ मा. त्रयो वाय. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा
नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वाय. ॐ नमो गीष्वात्मनः ह. त्रयो वा

[illegible]

मित्रयात्मनः कौनः प्रयायवषट् ॥ ॐ कौनमस्तु
 नमः ॥ मस्तु ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 गन्मास ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 यनमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 त्रैलोक्याय नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 यउरुत्रय नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

[illegible]

नमस्तु ते वायसदाष्टि वाय नमः॥३॥ ॐ कौन्तेय नमः
 श्वरीणां किं सुखं गाय नमः॥ ॥ अथ गी॥ ॐ कौन्तेय नमः
 य विष्णु रूपाय चन्द्राय धामनि निवसत उग्र दयालु॥
 ॥ ॐ अथात्राय नमः॥ ॐ अकपालाय नमः॥ ॐ अहिबुध-
 धाय नमः॥ ॥ ॐ विक्रमाय नमः॥ ॐ रुद्राय नमः॥ ॐ वरु-
 णाय नमः॥ ॐ शंभवाय नमः॥ ॐ सप्तश्वराय नमः ॥

॥२३ बर्यावलि॥

ॐ सावित्री नमः॥ ॐ जय न्नी नमः॥ ॐ पिना की नमः॥ ॐ अय
त्राजिगाय नमः॥ ॥ अथात्र मनु नं वलि ॥ अवारु न स्तु पः
न च न्द ना क्र ग य स्व व मः॥ अय दी प ने व द्यं नमः॥ दर्प न न
मः॥ लिंगं अ कि म् डां द र्श य ग् ॥ जय ॥ ॐ डां अथात्रा
य स्त्रा रु १०॥ जयं ग रु न स्त्रा रु ॥ अथ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
॥ ॐ अं गं ए स्म सि गं सि गं च रु सि गं रु स्तु क पा लं सि गं

ख द्वां गं च सि गं सि गं च व व श क ल्म स्तु ल क्कु ल्म ला गं अ
स्तु न सि गं सि गं च स क लं च नु सि गं म र्द नि ॥ अ वं सर्व सि गं
स्तु धा सु म हि मा या धा क्कु श र्णी क तः॥ ॐ अथ अ नं शि व य
सा द य त मं सर्वं अ कि श्व तं स्तु न न्द अत्र न्म य क स्म र्ग
वान् सं यू ल्म का म श्व तं पु दं वा ग श्व व त द स्तु वा ग्ग व प्र
दं वा मा दि व क श्व तं वा वि धा क वि मा स क व र य रु गो स्तु

संज्ञ

अथः शक्तिमां॥ ॐ वक्रमुसं कर्णसिखत्रमिवजिगो
लेनदावाग्निमाला नगपिं मगगा नं गिरिपित्रवहिः
स्त्रिउगका लभयः। दं फाचंडु प्ररुहि ४ प्रकगिउसुव
रुला लूयाग लमूलं, जं शर्वकुं सुवकुं गिद शरयरु
नं रुत्वेयं दक्षिणं रु॥ पायाहं पापकर्मानां पापात्मा
पापशस्त्रव, लासिमां दवदव श, सर्वपापारुगारु

त्रा॥ अं नउ सुननं नास्ति, गभवसुनेनं मया, न सर्वका
नलरुवन, त्रक्रमां पत्रमध्वन॥ ॐ श्वगुदवार्चन, न
उदवार्चन, गनुदवार्चन, विध्वग सर्वपत्रिपूर्वम
सु॥ ॥ वदार्चनप॥ ॐ॥ ॐ शिवानामासि॥ ॐ नमः
शंरुवायव॥ ॐ यागउउ शिवाननूतयाता॥ ॐ यामा
नवीननत्रिक॥ ॐ श्री श्वशिवाना नारुष शमलीभायना

घन

नव्या ए नव्य नख नो नाम् ॥ व दार्शन वि धन सर्व
पत्रि पू म सु ॥ ॥ न्या स लि का या ॥ द्वा या र्थ ॥ अ ध
ध ल सां, ॐ ह्रीं, ॐ नः, क न, व कु, ॐ गं न्या स, लि का
य, ॥ कि (म ग न, ॥ ना सि य ३ ॥ ॥ द द वा ॥ न न रु न म य
श ॥ ॐ न न म स्का नो ॥ अ र व नु म नु ला का लं ॥ ॐ न न व
प्ता, ॐ न वि षू, ॐ न द व म रु ध्य न खा दि ॥ व लि ग्रा स न,

काग

॥ प द्मा स्ना य न म ॥ अ र्घ्य स्ना य न मः ॥ आ स्ना स्ना य न मः ॥
॥ ॐ ह्रीं अ स्ना य रु द् ४ ॥ ॐ ह्रीं अ नु य्वा न म ॥ ॐ ह्रीं न
रु नि य्वा न म ॥ ॐ ह्रीं म ध्वा मा य्वा न मः ॥ ॐ ह्रीं अ ना मि का
य्वा न मः ॥ ॐ ह्रीं के नि स्त्रि का य्वा न मः ॥ ॐ ह्रीं क न न य
य्वा न मः ॥ ॐ ह्रीं रु द या य न मः ॥ ॐ ह्रीं सि न स स्ना रु ॥
॥ ॐ ह्रीं सी षा य वी ष द् ॥ ॐ ह्रीं न नु य्वा य व व द् ॥ ॐ ह्रीं ॥

KKK 41415145A

ገጽ ፩

Ἐκ τῆς ἀρχαίας

ἱστορίας

१५
०
गायेपादूपांश॥ ॐ निशांजलि॥ ॥ ५५ वापास, नागाय
नयगा॥ ॐ कौ, ॐ नि नासा॥ गांजलि॥ ॐ कौसः न भा
नागाय नाय नाय विष्मत्स न कौसखासावलि॥ ॥
॥ ५५ वापास, अनन ना नांयगा॥ गांजलि॥ ॥
॥ खवस, णानिष्ठनया गांजलि॥

॥ गलश, दो हां वानजवस, गांजलि, पस

०
५
॥ खगलिसां गांजलि॥ ॐ कौसिद्धि वाम अयपाद
कांश॥ ॥ ५५ वनया गांजलि॥ ॥ ॐ कौ कौ कौ कौ कौ न
मः॥ ॥ सिद्धि वनम हा रन वया गांजलि॥ ॐ कौ कौ कौ
रुट गिरवास्व न्दम हा रन वायपाद कांश॥ वलि॥ ॥
॥ लाकम हा वलि॥ ॐ कौ कौ पा लाय, वलि ग कौ रखा हा॥
॥ ॐ वौ व द्क नाथा य, वलि ग कौ रखा हा॥ वलि हाय क॥ ॐ
॥ गंजलयन य वलि ग कौ रखा हा॥ १॥

श्री कोष्ठाग्रनिखादि॥ ॥ श्री वारुनचन्द्रनाथाय नमः॥
॥ यानि मूढां दृष्टयन् ॥ ॐ धूतसि, नुंग आसि, नुं याः रुल
नी, नुं नयनं ॥ धूप दीपने च यादि, ॐ दमनसंकेल्य
सिद्धि नस्तु ॥ जय ॥ कौं सारुं, वौं सारुं, गौं सारुं, जौं सारुं,
धौं सारुं ॥ जयं गुरुन सारुं ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ मन्त्रुल
दयं कथं वज्रवस्, कथं वा, वायु ॥ भुवलय ॥ ॐ नमः

पुलाकात्रंलादि॥ ॐ ज्ञेयं त्रिंशत्तुल्यं त्रिंशत्तुल्यं त्रिंशत्तुल्यं
 रुक्माकर्षणं पाष्मिन्कुलं कर्मकर्मलथा नागध्वनं
 गंधर्वं। पाशं भादक पुरिगं ज्ञेयं यदं स्याप स्यापमं
 दृष्टं ज्ञेयं लमभाहं ज्ञेयं ज्ञेयं ज्ञेयं नमः॥ ॥
 ॥ नमस्तु नन्दाय सरुममरुं ॥ ॥ वन्द्यं सदा ज्ञेयं सनः
 वद ॥ ॥ ज्ञेयं प० ॥ न्यासलिकाय ॥ ज्ञेयं ज्ञेयं ज्ञेयं

॥लिकाय, ऊँ ॐ नि॥ २

ग न्यास॥ वलि, (धाय, ॥ स्नानं चूय, अर्घ्य पात्रं च, वलिख, वलि न पासं, पान कं, दा दा व या व, अच मन ३॥ न्यासं ॥
॥कि (म गान, द व प गिं॥ नमो भूतेभ्यः॥ अर्घ्य पात्रं स्नान, अर्घ्य
या, अर्घ्य पात्रं स्नान, वलि स ग य, ॥ अर्घ्य मन, ॥ ॐ अ
रम धृष्टि गं गायं, लम् गं कं वा य त्रि। द ह ल ग म
र र्या नां व फ र र्यां व धा रु उ॥ ॥ प्रणम या य॥ ॥

सु

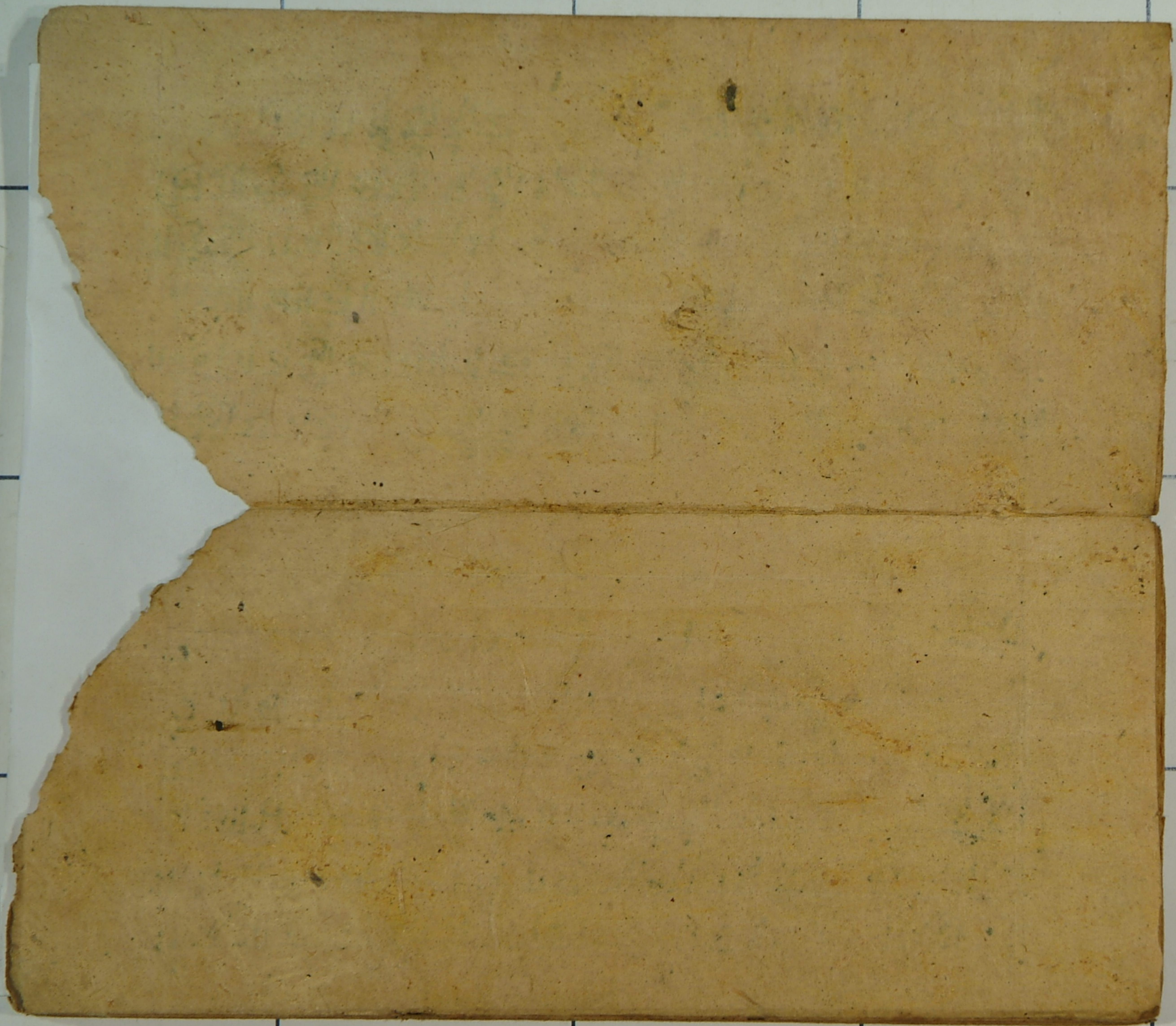
स्नान

॥३॥ पि ध या दा ध सं वा दा व, रु क ठु य, ना हिय र, न्यास लि काय, ऊँ ॐ
न को का या व, ध मं चू य॥ द व ध व र धा ला सं, स्व क
ध न, ॥ क थ गु वा या वा स, स क गं स्व क ध न, स्व गु त्रि सं
गाल न द य ॥ ॥ वा या रु व न, ल र्वा रु व न, रु कि या व
वा य य, न किं स ल गं ध ना, ॥ वा या वा ३ रु व न, न ल रु,
अनि ध्व त्र, द व रु ध, द व स्व या व, ॥ ॥ २०॥ ॐ नि पि
ध क र्म समा फ॥ ॥ ला स्कु ल या, प द्म नि, ध रु ला॥ ॥

ॐ ॥ ॐ कूं कूं कूं ॥ साधन मनु ३५ ॥

॥ ॐ कूं कूं ॐ निमल निरवा ॥ ॐ कूं कूं कूं ॐ
कल निरवा ॥ ॐ कूं कूं कूं स्वन कल निरवा ॥ यं वा
स्वाम नु ॥ ॥

सिनाय



२० अक्षं ^{कु} कं थ राउ ज्य मं दय वि द्य हल न ^{स्यो ना}

दक्षिण को ली याम कु ४॥ न स न ॥ अ गार ना य पा
द की ॥ कीं ३ हूँ २ कीं २ दक्षिण को लिक कीं २ हूँ २ कीं
मा ना ॥ ॥ ॥

शी ग (८) म य न म ४॥ शी रु द की म ल म न
ॐ पूं नूं मूं कूं दूं नूं सिद्धि रु ग व नि क्तूं को दूं सिद्धी
ही म व के क्ती महा य च पा ह लि २ च क नं नूं
किलि २ म ह न्नि स्य न क्क ल २ वि द्यू जि क्क ल २ र नि
मी स क ठ २ म ना सा रु ज (८) किलि २ म व मा ह

लाधाविधीदावय २ महाजोडसाईचर्मक
नचदविर्जरुय २ नृपमसिलनाधाविधीझा
महामाथरुक्रुटिनटाथापविषममंरुक्रुगा
ननंरुस (मदविलिकगा) रुक्रु २ रुक्रु २ नी
लजीमूतवल्हू रुगमालाहंगा रुज (विम

न २ र्घटाचवाकीर्णदह क्रीं किं न व म मी म
प्र थ मिम २ न म म म मिम २ डां डी डं जोडचूपकौ
डां सुं रुलाकीडा रुय २ व र्धक रु २ व षट्ठु रु (म
त्रां कौं डी रुम २ रुा क षय २ धन २ रुह १ रु १ व
जिधीर्जरु माह हूं रुम १ रुा व चूपपडल

२हीमहीप्रणीहिंद२मह। कायचिंद२कमलि
हीकिटि२मह। हनमान सर्वदृष्टनिवापिणी
जय२विजय२अजिगपनाजिगहूरुद३ह
३हृद३हीनलोकविजयनजदविष्टदृष्ट
मूंनूंनूंस्वाहा॥ । जप॥ १०८॥ ज४॥ २०

ॐ ॥ चं दुर्विधरुताग्रामा सर्वदृष्टिनिवाजिः
जया जविजया जैव रुद्रकाली नमो मुने ॥ ५४ ॥